

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 31

2018

JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD



EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

अनुक्रमणिका

1. सिंधिया राजाओं के ग्वालियर किला टकसाल से जारी चाँदी के सिक्के : एक अध्ययन डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	1
2. मध्यकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास का स्रोत : कान्हड़दे प्रबन्ध डॉ. प्रणव देव	10
3. महाभारत काल में कन्नौज राज्य की स्थिति डॉ. विभा राठौड़	17
4. पूर्व मध्यकालीन सामाजिक कुरीतियाँ डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी	21
5. निम्न जातीय वर्ग के पहचान का निर्माण : ज्योतिबा फुले डॉ. अनिल दुबे	25
6. मध्यकालीन अनतिख्यात महिला सन्त : भक्तशिरोमणि रानाबाई डॉ अर्चना द्विवेदी	28
7. युग परिवर्तन का ऐतिहासिक साक्षी : कालिंजर डॉ. अरविन्द दीक्षित	34
8. प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली : वैदिक कालीन शिक्षा के विशेष संदर्भ में अतुल कुमार मिश्र	38
9. बुन्देलखण्ड का तात्या टोपे : दिमान देशपत बुन्देला डॉ. बी.के. श्रीवास्तव	44
10. होशंगाबाद की महिला संत परम्परा डॉ. हंसा व्यास	49
11. वनखण्डेश्वर शिव मंदिर का ऐतिहासिक परिदृश्य डॉ. मीना श्रीवास्तव	57
12. ब्रिटिश काल में जातियों के नृजातीयकरण की उत्पत्ति डॉ. नवीन गिडियन	61
13. पर्यावरण संरक्षण और वैदिक संस्कृति डॉ. रचना शर्मा	65
14. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में अभिलेखों की मूल्यवत्ता डॉ. आर.पी. सिंह	68
15. बौद्ध धर्म की शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसार में विदेशी यात्रियों की भूमिका डॉ. शान्तिदेव सिसौदिया	74
16. गढ़ा की गौंड कालीन बावलियों की जल संरक्षण व्यवस्था डॉ. वन्दना गुप्ता	77

बुन्देलखण्ड का तात्या टोपे : दिमान देशपत बुन्देला

डॉ. बी. के. श्रीवास्तव

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - इतिहास विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

देशपत बुन्देला छत्रसाल के वंशज थे। उनके पूर्वज अर्जुन सिंह के पास झींझन टोरिया की जागीरदारी थी। उनके बाद नृपति सिंह एवं उनके बाद जवाहर सिंह झींझन टोरिया के जागीरदार बने झींझन गाँव नौगाँव से 11 मील दूर छतरपुर की उत्तरी सीमा पर स्थित था। जवाहर सिंह के भाई दिमान देशपत बुन्देला थे। जवाहर सिंह को चिकनी-चुपड़ी बातों में लगाकर मोहन चौबे नामक व्यक्ति ने जवाहर सिंह से झींझन-टोरिया की लम्बरदारी पर अपना नाम भी अंकित करा लिया।¹ यह मोहन चौबे अंग्रेजों से मिला हुआ था। एक बार देशपत विवाह के पश्चात् अपनी पत्नी को लेने ससुराल टट्टम पहुँचे। वहाँ के कुछ मनचले युवकों ने उन पर ताना कसा - 'ये कैसे छत्रसाल के वंशज हैं, इनमें अंग्रेजों को बुन्देलखण्ड से निकालने का साहस नहीं है।' तब देशपत ने प्रतिज्ञा की 'जब तक अंग्रेजों को बीन-बीन कर खतम न कर दूँ और बुन्देलखण्ड को अंग्रेज विहीन न कर दूँ, मैं दोबारा टट्टम में प्रवेश नहीं करूँगा, न ही मेरी रानी।'²

सर्वप्रथम तो झींझन आकर उन्होंने अंग्रेज समर्थक मोहन चौबे का काम-तमाम किया। अंग्रेज इससे नाराज हुए। देशपत वहाँ से भाग निकले। बुन्देलखण्ड में उन्होंने लोगों को क्रांति हेतु प्रेरित करना आरम्भ कर दिया। बुन्देलखण्ड में क्रांति का जनक देशपत को ही माना गया।³ देशपत के आह्वान पर टोरिया के बुन्देलों के घर-घर में क्रांति के लिये मर-मिटने वाले युवक तैयार होने लगे। आस-पास के लोगों की देशपत पर अगाध श्रद्धा थी।

देशपत ने घोषणा कर दी कि जो कोई भी उसकी जागीर झींझन का पट्टा लिखायेगा, उसे मौत के घाट उतार दिया जावेगा।⁴ अंग्रेजों द्वारा जिन सात व्यक्तियों को झींझन गाँव के पट्टे दिये गये उनको देशपत ने मौत के घाट उतार दिया।

देशपत के भाई-बहन

छत्रसाल के पुत्र जगतराज, जगतराज के पुत्र केहरि सिंह, केहरि सिंह के पुत्र अर्जुन सिंह एवं अर्जुन सिंह के पुत्र थे नृपति सिंह। नृपति सिंह के पुत्र-पुत्रियों (देशपत के भाई-बहनों) का वर्णन इस प्रकार है -

दिमान ईश्वरी सिंह : यह जवाहर सिंह के द्वितीय पुत्र थे। इन्होंने अपने चाचा देशपत का 1857 की क्रांति में साथ दिया था। 1857 की क्रांति में भाग लेने के कारण उन्हें आजीवन कारावास की सजा हो गई।
पहार सिंह : यह जवाहर सिंह के पाँचवें पुत्र थे। यह क्रांतिकारियों के परिवार का भरण-पोषण करते थे।
जगजीत सिंह : इन्होंने देशपत के साथ 1857 की क्रांति में सक्रिय भाग लिया।
देशपत की सात बहनें थीं -

1. मुसम्मात कुदेरू जू - इनका विवाह गंभीर सिंह से हुआ था। इनका पुत्र कुन्जलशाल प्रख्यात क्रांतिकारी था। यह छतरपुर के ग्राम अजरा में रहती थीं।